* नया नुगा नौ दिन, नुगरी बरीस दिन

Ans => प्रस्तुत लोकोक्ति का प्रयोग बिहार के ग्रामीण परिवेश में अक्सर किया जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है कि नए की तुलना में पुराने पर अधिक विश्वास होता है। नई वस्तु की चमक कुछ दिनों के लिए होती हैं, जबकि पुरानी वस्तु लंबे समय तक चलती हैं। पुरानी वस्तु वक्त का इम्तिहान पास की होती है तथा अपने आप को साबित की होती है, जिस कारण उसे प्रयोग करने में किसी तरह का संशय नहीं हो पाता है। इस लोकोक्ति के आशय को हम निम्न प्रकार के उदाहरणों से समझने का प्रयास करते हैं, जिसमें प्रमुख हैं:- हमारे पुराने मित्रों एवं रिश्तेदारों से हमें कई वर्षों का संबंध जुड़ा रहता है, जिस कारण हम एक-दूसरे की कमियों एवं खुबियों को जानते हैं। समय आने पर वे एक-दूसरे की मदद करने को लेकर अग्रसर रहते हैं। वह आर्थिक एवं शारीरिक दोनों रूपों में हमारी मदद करते हैं तथा उसका गुणगान भी नहीं करते अर्थात् वे अपने किये उपकार का उल्लेख भी नहीं करते हैं, किन्तु नए मित्र एवं संबंधियों से कम समय का संबंध होता है, जिस कारण उनके संबंधों में

प्रगाढ़ता एवं विश्वास की कमी होती है वे मदद करने से कतराते हैं। नये लोगों में विश्वास की कमी ही खुलकर मदद न करने हेतु प्रेरित करना है। वहीं पुराना मित्र को यह विश्वास रहता है कि हमारा मित्र हमें धोखा नहीं देगा और पूर्ण आत्मविश्वास और लगन से मदद करता है। इसीलिए तो कहा गया है कि - 'old is gold'।

आज हम कई प्रकार के चलचित्र देखते हैं, तथा संगीत सुनते हैं लेकिन जो आनंद एवं रस हमें पुराने चलचित्रों एवं संगीतों से मिलता है, वो आनंद हमें नये चलचित्रों एवं संगीतों से नहीं मिलता है। जैसे- पुराना रामायण सीरियल जो रामानंद सागर जी के डायरेक्शन में बना था, उसमें श्रीराम एवं माँ सीता की एक सत्य छवि दिखलाई प्रतीत होती है। इस सीरियल को देखने में हमें वास्तविकता का आभास होता है, किन्तु वर्तमान में कई रामायण सीरियल बने, जिसमें काल्पनिकता का बोध होता है। कुछ संगीतकार जैसे- अरीजित सिंह, जुबिन नौटियाल आदि पुराने संगीतकार जैसे लता मंगेशकर, आशा भोंसले, अलका याज्ञनिक आदि के समक्ष धूमिल प्रतीत होते हैं अर्थात् पुराना संगीत ही आज तक हमारे मन मस्तिष्क में चलते रहते हैं। नया संगीत कुछ समय के पश्चात मन से उतर जाता है। इसीलिए तो कहा गया है-

"नया नौ दिन, पुराना सौ दिन"

समय हर चीज को पीछे छोड़ देता है, किन्तु पुरानी ~~चीजें~~ चीजें अपनी विश्वसनीयता को इस कदर बनाकर रखती है कि लोग उस पर पूर्ण रूप से बिना संशय के विश्वास करते हैं

इसी क्रम में हम LIC (जीवन बीमा निगम) को देखते हैं इसकी स्थापना 1956 में हुई, लेकिन इसके ऊपर लोगों का इतना विश्वास है कि भारत का अत्यधिक लोग इसके अपनी जीवन की पूँजी लगाते हैं। इसकी विश्वसनीयता आज भी कायम है। कुछ ब्रांड जैसे- रेमंड कपड़ा, लखानी एवं बाटा का जूता एवं चप्पल, सोनाटा की घड़ी, फिलीप्स का रेडियो, आदि का बाजार में इतना सकारात्मक प्रभाव है कि लोग बिना किसी जाँच पड़ताल के इसको खरीदते हैं, तथा इसका उपयोग करते हैं। पुराने समय में दूल्हा को सोनाटा की घड़ी नहीं मिलने पर, वह रूठ जाता था। यह पुरानी चीजों की प्रमाणिकता और विश्वसनीयता का दर्शाता है।

भारत के साथ कुछ पुराने देशों के संबंध को देखें तो उनमें रूस का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। एक समय था जब अमेरिका, पाकिस्तान का सहयोग भारत के विरुद्ध कर रहा था, तब रूस ने भारत का सहयोग किया था। आज भी रूस भारत को S-400 मिसाइल दिया तथा कम कीमत पर भारत को पेट्रोलियम तेल को दिया। रूस के साथ भारत का हमेशा से अच्छा संबंध रहा है। अफगानिस्तान, भारत का पड़ोसी देश है, जहाँ भारत के सहयोग से कई योजनाएँ संचालित हो रही हैं, जिसमें संसद भवन का निर्माण, सलमा डैम का निर्माण एवं अस्पताल का निर्माण आदि प्रमुख हैं। जहाँ USA, एवं रूस ने अपने सैनिकों को कई वर्षों तक रखा। यहाँ से दोनों चले गए किन्तु आज भी अफगानिस्तान भारत के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने का प्रयास कर रहा है। वर्तमान में तालिबान शासित सरकार आतंकवाद एवं अन्य मुद्दे पर भारत का साथ देती है, पाकिस्तान का नहीं। अतः इससे साबित होता है कि पुराना संबंध अधिक विश्वासपरक

होता है।

हालांकि भारत ने बंगलादेश के निर्माण में 1971 ई० के अहम योगदान दिया था, लेकिन चाइना की ऋण जाल की नीति मे फँसकर बंगलादेश भी कई बार भारत विरोधी कार्य करता रहा है। मालदीव, श्रीलंका, पाक एवं म्यांमा भी भारत के पड़ोसी होने के साथ भी अपना संबंध अच्छे से नहीं रख पाते हैं, जो भारत के लिए चिंता का विषय है। भारत इनके साथ कूटनीतिक समझदारी का प्रयोग कर अपनी पड़ोसी नीति को प्रबल बनाकर अपनी पुरानी मित्रता को सशक्त एवं विश्वसनीय बनाने का प्रयास कर सकता है। हमें पुरानी कीमती चीजों को इज्जत के साथ संभालकर रखनी चाहिए। ये जितनी पुरानी होगी, उतनी ही कीमती होती जायेगी। भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की लगभग 70% आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्य में संलग्न है। प्रारंभ में कृषि में जैविक प्रणाली का ही प्रयोग किया जाता था, किन्तु विज्ञान की उन्नति ने रासायनिक प्रणाली को कृषि क्षेत्र में ज्यादा शक्तिशाली बना दिया। इसका असर ये हुआ कि आज अत्यधिक रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक एवं पीड़कनाशी आदि के उपयोग से मिट्टी एवं जल काफी दूषित हो गए हैं तथा जिसका प्रभाव स्थलीय एवं जलीय तथा वायवीय जीव-जंतुओं पर नकारात्मक रूप से पड़ता है। फलत: वैश्विक स्तर पर भारत सहित जैविक कृषि प्रणाली को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत इस दिशा में काफी प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। परंपरागत कृषि विकास योजना (2015), एक जिला-एक उत्पाद योजना, एक ब्लॉक-एक उत्पाद योजना एवं जैविक ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म आदि को प्रारंभ किया। बिहार में जैविक कॉरिडोर का प्रारंभ तथा जैविक कृषि करने वालों को अनुदान (11000रु./हेक्टेयर) देने की घोषणा की गई है। अर्थात् आज वैश्विक स्तर पर पुराने कृषि प्रणाली की विश्वसनीयता के कारण ही जैविक कृषि को बढ़ावा दिया जा रहा है। सिक्किम भारत का प्रथम राज्य है

BIHAR NAMAN PUBLICATION

Scanned with OKEN Scanner

जिसने पूर्ण रूप से जैविक कृषि प्रणाली को अपनाया है। भारत जैविक कृषकों के मामले में प्रथम तथा जैविक कृषि क्षेत्रफल के मामले में 9 वें स्थान पर है। इसीलिए तो कहा गया है कि

" दरिया अगर सूख भी जाए तो
उसकी रेत से नमी नहीं जाती।

इसीलिए तो कहा गया है नया नौ दिन पुराना सौ दिन।

स्पष्टत: कहा जा सकता है कि पुराने वस्तुओं एवं लोगों पर विश्वसनीयता बनी रहती है। नये वस्तुओं का उपयोग हमें आशंकित करते हैं। अत: पुराने अपनी लोकप्रियता लंबे समय तक बनाए रखते हैं। जिस प्रकार किसी जगह का नाम परिवर्तित कर देने पर भी पुराना नाम ही लोगों की जुबां पर रहता है।

" वो पुराने दिन आज भी कुछ कहते हैं।
यादों की क्यारियों में मीठी याद बनकर रहते हैं।"

BIHAR NAMAN PUBLICATION

Scanned with OKEN Scanner